सम्मेद शिखर तीर्थवंदना

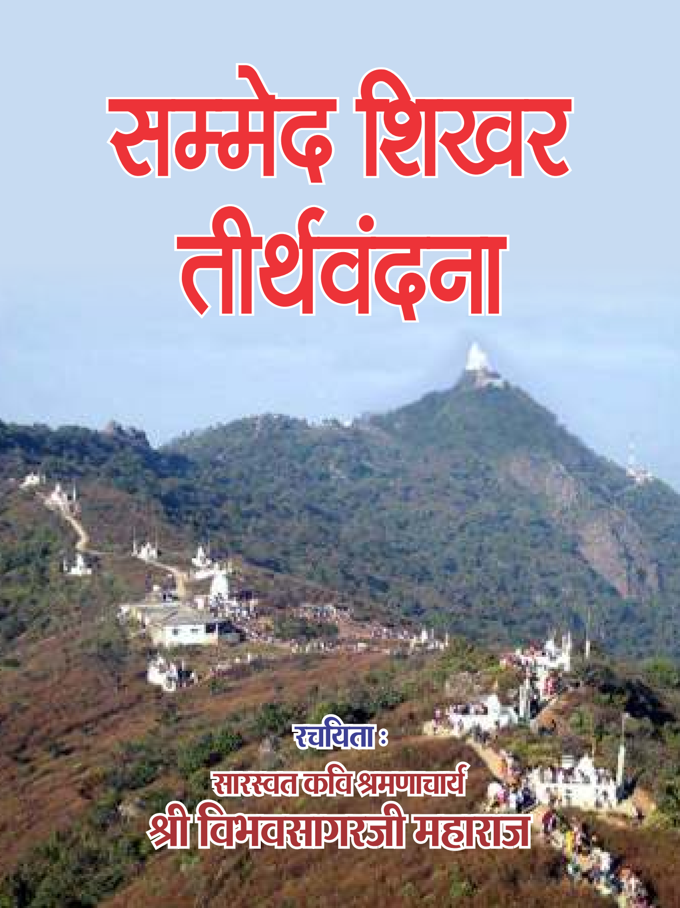

रचयिता :

सारस्वत कवि श्रमणाचार्य

श्री विभवसागरजी महाराज

टोंक स्मरण

पहली टोंक है सब गणधर की, दूजी टोंक कुन्थु जिनवर की,
टोंक तीसरी नमिनाथ की, टोंक चतुर्थी अरहनाथ की।

टोंक पाँचवी मल्लिनाथ की, छठवीं है श्रेयांसनाथ की,
टोंक सातवीं पुष्पदंत की, टोंक आठवीं पदम्प्रभु की।

नवीं टोंक है मुनिसुव्रत की, दसवीं जानो चन्द्रप्रभु की,
टोंक ग्यारवीं आदिनाथ की, टोंक बारवीं शीतलनाथ की।

टोंक तेरवीं नाथ अनंता, चौदहवीं संभव भगवंता,
पन्द्रहवीं श्री वासुपूज्य की, सोलहवीं अभिनंदन जी की।

सत्रहवीं श्री धर्मनाथ की, टोंक अठारह सुमतिनाथ की,
टोंक उनीसी शांतिनाथ की, टोंक बीसवीं महावीर की।

श्री सुपारस की इकबीसी, विमलनाथ की है बावीसी,
अजितनाथ की है तेवीसी, नेमिनाथ की है चौबीसी।

पार्श्वनाथ की टोंक पे आओ
अपना जीवन सफल बनाओ।।

सम्मेद शिखर तीर्थवंदना

रचयिता

सारस्वत कवि
श्रमणाचार्य विभवसागर मुनिराज

संकलन

ब्र. प्रिया दीदी

श्री संघसाथ सम्मेद शिखर तीर्थवंदना के उपलक्ष्य में

पुण्यार्जक एवं प्राप्ति स्थल

प्रस्तावना

श्री सम्मेद शिखर तीर्थवंदना का दुर्लभतम शुभ संयोग बना। 24 फरवरी से 31 मई तक शिखर जी में प्रवास रहा। पर्वतराज की 21 वंदना निजी हुईं।

संघस्थ साधुगण एवं माता जी तथा त्यागी वृन्द ने अधिक वंदनायें भी की। 16 पिच्छिधारी + 4 त्यागीव्रती = 20 साधकों का एक समूह पर्वतराज की वंदना पर रहा।

प्रस्तुत काव्य अनुभूतियों का अमर कोषालय है। पर्वतराज की वंदना करते समय जो पवित्र ऊर्जावान परिणाम हुए, उन पवित्र परिणामों के रस रसायनों ने भक्ति काव्य का रूप ले लिया। वे भक्तिकाव्य एक-दो नहीं शताधिक होते गये। फलस्वरुप सिर्फ संरक्षण होता रहा।

कोतमा वर्षायोग 2016 में पवित्र ऊर्जावान काव्य कोषालय ने कलम का सहारा लिया। गुरुपूर्णिमा से रक्षाबन्धन तक एक माह में लेखन का कार्य हुआ। इसमें प्रत्येक टोंक के अर्घ हैं। इस संकलन को संघस्थ प्रिया दीदी ने रिकार्डिंग कर स्वयं लेखनकर मुझे सौंपा, फलस्वरुप मैंने अपनी परिणाम ऊर्जा से संस्कारित कर विधिवत लेखन एवं सम्पादन कर कृति रूप तैयार किया। तीर्थकृति में प.पू.आ.श्री विरागसागर जी आशीर्वाद रहा।

नमोस्तु

शुभ भावना।

सम्मेद शिखर तीर्थवन्दना

(प्रत्येक टोंक अर्घावली)

।। चौपाई ।।

गौतम स्वामी

सबसे पहले टोंक कहायी,

गौतम गणधर पूजों भाई।

श्री सम्मेद शिखर जी आऊँ।

करूँ वंदना अर्घ चढ़ाऊँ।।1।।

ऊँ ह्रीं श्री गौतम स्वामी आदि गणधर देव भिन्न-भिन्न स्थानों से मोक्ष पधारे तिनके चरण कमल में बारम्बार नमोऽस्तु-3 जलादि महार्घ निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानधर कूट
कुन्थुनाथ भगवान

|| चौपाई ||

कूट ज्ञानधर अब यह आया,

कुन्थुनाथ ने शिव पद पाया।

श्री सम्मेद शिखर जी आऊँ,

करूँ वंदना अर्घ चढ़ाऊँ।।2।।

ऊँ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्रादि 96 कोड़ा कोड़ी 96 करोड़ 32 लाख 96 हजार 742 मुनि इस ज्ञानधर कूट से सिद्ध हुए तिनके चरणारविन्द में मन-वचन-काय से नमोऽस्तु-3 जलफलादि महार्घ निर्वपामीति स्वाहा।

इस टोंक की भाव सहित वंदना करने से 1 करोड़ उपवास का फल होता है।

मित्रधर कूट

नमिनाथ भगवान

।। चौपाई ।।

कूट मित्रधर नाम कहाया,

नमिनाथ ने शिव पद पाया।

श्री सम्मेद शिखर जी आऊँ,

करूँ वंदना अर्घ चढ़ाऊँ।।3।।

ऊँ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्रादि 900 कोड़ा-कोड़ी 1 अरब 45 लाख 7 हजार 942 मुनि इस मित्रधर कूट से सिद्ध हुए तिनके चरणारविन्द में मन-वचन-काय से बारम्बार नमोऽस्तु-3 जलफलादि महार्घ निर्वपामीति स्वाहा।

इस टोंक की भाव सहित वंदना करने से 1 करोड़ उपवास का फल होता है।

नाटक कूट

अरहनाथ भगवान

|| चौपाई ||

नाटक कूट सुहाना आया,
अरहनाथ ने शिवपद पाया।
श्री सम्मेद शिखर जी आऊँ,
करूँ वंदना अर्घ चढ़ाऊँ।4 ||

ऊँ ह्रीं श्री अरनाथ जिनेन्द्रादि 99 करोड़, 99 लाख 99 हजार 999 (एक कम एक अरब) मुनि इस नाटक कूट से सिद्ध भये तिनके चरणारविन्द में मन-वचन-काय से बारम्बार नमोऽस्तु-3 जलादि महार्घ निर्वपामीति स्वाहा।

इस टोंक की भाव सहित वंदना करने से 96 करोड़ उपवास का फल होता है।

संबल कूट
मल्लिनाथ भगवान

।। चौपाई ।।

संबल कूट स्वयंबल दाता,
मल्लिनाथ निर्वाण प्रदाता।
श्री सम्मेद शिखर जी आऊँ,
करूँ वंदना अर्घ चढ़ाऊँ।।5।।

ऊँ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्रादि 96 करोड़ मुनि संबल कूट से सिद्ध हुए तिनके चरणारविन्द में मन-वचन-काय से बारम्बार नमोस्तु-3 जलादि महार्घ निर्वपामीति स्वाहा।

इस टोंक की भाव सहित वंदना करने से1 करोड़ प्रोषध उपवास का फल होता है।

संकुल कूट
श्रेयांसनाथ भगवान

|| चौपाई ||

संकुल कूट सिद्ध कुल दायी,
श्री श्रेयांस ने मुक्ति पायी।
श्री सम्मेद शिखर जी आऊँ,
करूँ वंदना अर्घ चढ़ाऊँ।।6।।

ऊँ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्रादि 96 कोड़ा-कोड़ी 96 करोड़ 96 लाख 9 हजार 542 मुनि इस संकुल कूट से सिद्ध भये तिनके चरणारविन्द में मन वचन-काय से बारम्बार नमोऽस्तु-3 जलादि महार्घ निर्वपामीति स्वाहा।

इस टोंक की भाव सहित वंदना करने से 1 करोड़ प्रोषध उपवास का फल होता है।

सुप्रभ कूट
पुष्पदन्त भगवान

|| चौपाई ||

सुप्रभ कूट महासुखदायी,
पुष्पदंत ने मुक्ति पायी।
श्री सम्मेद शिखर जी आऊँ,
करूँ वंदना अर्घ चढ़ाऊँ।।7।।

ऊँ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्रादि 1 कोड़ा कोड़ी 99 लाख 7 हजार 480 मुनि इस सुप्रभ कूट से मुक्त हुए तिनके चरण कमल में मन-वचन-काय से बारम्बार नमोऽस्तु-3 जलादि महार्घ निर्वपामीति स्वाहा।

इस टोंक की भाव सहित वंदना करने से 1 करोड़ उपवास का फल होता है।

मोहन कूट
पद्मप्रभ भगवान

|| चौपाई ||

मोहन कूट यहाँ अब आया,
पदम् प्रभु ने मोह नशाया।
श्री सम्मेद शिखर जी आऊँ,
करूँ वंदना अर्घ चढ़ाऊँ||8||

ऊँ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्रादि 99 करोड़ 87 लाख 43 हजार 757 मुनि इस कूट से मोक्ष पधारे तिनके चरण कमल में बारम्बार नमोऽस्तु-3 जलादि महार्घ निर्वपामीति स्वाहा।

इस टोंक की भाव सहित वंदना करने से 1 करोड़ उपवास का फल होता है।

निर्जर कूट
मुनिसुव्रतनाथ भगवान

।। चौपाई ।।

निर्जर कूट निर्जरा कारी,
मुनिसुव्रत का शिव सुख कारी।
श्री सम्मेद शिखर जी आऊँ
करूँ वंदना अर्घ चढ़ाऊँ।।9।।

ऊँ ह्रीं श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्रादि 99 कोड़ा-कोड़ी 99 करोड़ 99 लाख 999 मुनि इस निर्जर कूट से मोक्ष पधारे तिनके चरण कमल में बारम्बार नमोऽस्तु-3 जलादि महार्घ निर्वपामीति स्वाहा।

इस टोंक की भाव सहित वंदना करने से 1 करोड़ प्रोषध उपवास का फल होता है।

ललित कूट

चन्द्रप्रभु भगवान

|| चौपाई ||

ललित कूट लालित्य दायी,
चंदाप्रभु ने मुक्ति पायी।
श्री सम्मेद शिखर जी आऊँ,
करुँ वंदना अर्घ चढ़ाऊँ।।10।।

ऊँ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्रादि 984 अरब 72 करोड़ 80 लाख 84 हजार 595 मुनि इस ललित कूट से मोक्ष पधारे तिनके चरण कमल में बारम्बार नमोऽस्तु-3 जलादि महार्घ निर्वपामीति स्वाहा।

इस टोंक की भाव सहित वंदना करने से 96 लाख उपवास का फल होता है।

आदिनाथ भगवान
कैलाश पर्वत

|| चौपाई ||

आदिनाथ भगवान हमारे,
अष्टापद से मोक्ष पधारे |
श्री सम्मेद शिखर जी आऊँ,
करूँ वंदना अर्घ चढ़ाऊँ |11 ||

ऊँ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्रादि 10 हजार मुनि कैलाश पर्वत से मोक्ष पधारे उनके चरणों में मन-वचन-काय से बारम्बार नमोऽस्तु-3 जलादि महार्घ निर्वपामीति स्वाहा |

विद्युतवर कूट
शीतलनाथ भगवान

।। चौपाई ।।

विद्युतवर यह कूट कहाया,
शीतल प्रभु ने शिवपद पाया।
श्री सम्मेद शिखर जी आऊँ,
करूँ वंदना अर्घ चढ़ाऊँ।।12।।

ऊँ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्रादि 18 कोड़ा कोड़ी 42 करोड़ 32 लाख 42 हजार 905 मुनि इस विद्युतवर कूट से सिद्ध हुए उनके चरणों में मन-वचन-काय से बारम्बार नमोऽस्तु-3 जलादि महार्घ निर्वपामीति स्वाहा।

इस टोंक की भाव सहित वंदना करने से 1 करोड़ उपवास का फल होता है।

स्वयंभू कूट
अनंतनाथ भगवान

|| चौपाई ||

कूट स्वयंभू नाम कहाया,
जिन अनंत ने शिवपद पाया।
श्री सम्मेद शिखर जी आऊँ,
करूँ वंदना अर्घ चढ़ाऊँ।।13।

ऊँ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेन्द्रादि 96 कोड़ा कोड़ी 70 करोड़ 70 लाख 70 हजार 700 मुनि इस स्वयंभू कूट से सिद्ध हुए तिनके चरण कमल में मन-वचन-काय से बारम्बार नमोऽस्तु-3 जलादि महार्घ निर्वपामीति स्वाहा।

इस टोंक की भाव सहित वंदना करने से 1 करोड़ उपवास का फल होता है।

धवल कूट
संभवनाथ भगवान

|| चौपाई ||

धवल कूट शुभ नाम कहाया,
संभव जिनने शिवपद पाया।
श्री सम्मेद शिखर जी आऊँ,
करूँ वंदना अर्घ चढ़ाऊँ।।14।।

ऊँ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्रादि 9 कोड़ा कोड़ी 72 लाख 42 हजार 500 मुनि इस धवल कूट से सिद्ध हुए उनके चरण कमल में बारम्बार नमोऽस्तु-3 जलादि महार्घ निर्वपामीति स्वाहा।

इस टोंक की भाव सहित भाव सहित वंदना करने से 42 लाख उपवास का फल होता है।

वासुपूज्य भगवान

चम्पापुर

|| चौपाई ||

वासुपूज्य भगवान हमारे,
चम्पापुर से मोक्ष पधारे।
श्री सम्मेद शिखर जी आऊँ
करूँ वंदना अर्घ चढ़ाऊँ।।15।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्रादि 1 हजार मुनि चम्पापुर से मोक्ष पधारे तिनके चरण कमल में मन-वचन-काय से बारम्बार नमोऽस्तु-3 जलादि महार्घ निर्वपामीति स्वाहा।

आनंद कूट
अभिनंदन नाथ भगवान

|| चौपाई ||

यही कूट आनंद कहाया,
अभिनंदन ने शिवपद पाया।
श्री सम्मेद शिखर जी आऊँ,
करूँ वंदना अर्घ चढ़ाऊँ||16||

ऊँ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्रादि 72 कोड़ा कोड़ी 70 करोड़ 70 लाख 42 हजार 700 मुनि इस आनंद कूट से सिद्ध हुद तिनके चरणारविन्द में मन-वचन-काय से बारम्बार नमोऽस्तु-3 जलादि महार्घ निर्वपामीति स्वाहा।

इस टोंक की भाव सहित वंदना करने से 1 लाख उपवास का फल होता है।

सुदत्तवर कूट
धर्मनाथ भगवान

|| चौपाई ||

यह सुदत्तवर कूट कहाया,
धर्मनाथ ने शिवपद पाया।
श्री सम्मेद शिखर जी आऊँ,
करूँ वंदना अर्घ चढ़ाऊँ||17||

ऊँ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्रादि 29 कोड़ा कोड़ी 19 करोड़ 9 लाख 9 हजार 795 मुनि इस सुदत्तवर कूट से सिद्ध हुए तिनके चरण कमल में मन-वचन-काय से बारम्बार नमोऽस्तु-3 जलादि महार्घ निर्वपामीति स्वाहा।

इस टोंक की भाव सहित वंदना करने से 1 करोड़ उपवास का फल होता है।

अविचल कूट
सुमतिनाथ भगवान

|| चौपाई ||

अविचल कूट अचल पद दायी,
सुमतिनाथ ने मुक्ति पायी |
श्री सम्मेद शिखर जी आऊँ,
करूँ वंदना अर्घ चढ़ाऊँ ||18 ||

ऊँ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्रादि 1 कोड़ा कोड़ी 84 करोड़ 72 लाख 81 हजार 781 मुनि इस अविचल कूट से सिद्ध हुए तिनके चरण कमल में मन- वचन-काय से बारम्बार नमोऽस्तु-3 जलादि महार्घ निर्वपामीति स्वाहा |

इस टोंक की भाव सहित वंदना करने से 9 करोड़ 32 लाख उपवास का फल होता है |

कुन्दप्रभ कूट
शान्तिनाथ भगवान

|| चौपाई ||

कूट कुन्दप्रभ नाम कहाया,
शान्तिनाथ ने शिवपद पाया।
श्री सम्मेद शिखर जी आऊँ,
करूँ वंदना अर्घ चढ़ाऊँ।।19।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्रादि 9 कोड़ा कोड़ी 9 लाख 9 हजार 999 मुनि इस कुंदप्रभ कूट से सिद्ध हुए तिनके चरण कमल में मन-वचन-काय से बारम्बार नमोऽस्तु-3 जलादि महार्घ निर्वपामीति स्वाहा।

इस टोंक की भाव सहित वंदना करने से 1 करोड़ उपवास का फल होता है।

महावीर भगवान
पावापुर

।। चौपाई ।।

महावीर भगवान हमारे,
पावापुर से मोक्ष पधारे।
श्री सम्मेद शिखर जी आऊँ,
करुँ वंदना अर्घ चढ़ाऊँ।।20।।

ऊँ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्रादि 26 मुनि पावापुर के पदमसरोवर स्थान से सिद्ध हुए तिनके चरण कमल में मन- वचन-काय से बारम्बार नमोऽस्तु-3 जलादि महार्घ निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभास कूट
सुपार्श्वनाथ भगवान

|| चौपाई ||

यह प्रभास शुभ कूट कहाया,
श्री सुपार्श्व ने शिवपद पाया।
श्री सम्मेद शिखर जी आऊँ,
करूँ वंदना अर्घ चढ़ाऊँ||21||

ऊँ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्रादि 49 कोड़ा कोड़ी 84 करोड़ 72 लाख 7 हजार 742 मुनि इस प्रभास कूट से सिद्ध हुए तिनके चरण कमल में मन-वचन-काय से बारम्बार नमोऽस्तु-3 जलादि महार्घ निर्वपामीति स्वाहा।

इस टोंक की भाव सहित वंदना करने से 32 करोड़ उपवास का फल होता है।

सुवीर कूट

विमलनाथ भगवान

|| चौपाई ||

कूट सुवीर यही कहलाया,

विमलनाथ ने शिवपद पाया।

श्री सम्मेद शिखर जी आऊँ,

करुँ वंदना अर्घ चढ़ाऊँ||22||

ऊँ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्रादि 70 कोड़ा-कोड़ी 60 लाख 7 हजार 742 मुनि इस सुवीर कूट से सिद्ध हुए तिनके चरण कमल में मन-वचन-काय से बारम्बार नमोऽस्तु-3 जलादि महार्घ निर्वपामीति स्वाहा।

इस टोंक की भाव सहित वंदना करने से 1 करोड़ उपवास का फल होता है।

सिद्धवर कूट
अजितनाथ भगवान

|| चौपाई ||

कूट सिद्धवर यह कहलाया,
अजितनाथ ने शिवपद पाया।
श्री सम्मेद शिखर जी आऊँ,
करूँ वंदना अर्घ चढ़ाऊँ।।23।।

ऊँ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्रादि 1 अरब 80 करोड़ 54 लाख मुनि इस सिद्धवर कूट से सिद्ध हुए तिनके चरण कमल में मन-वचन-काय से बारम्बार नमोऽस्तु-3 जलादि महार्घ निर्वपामीति स्वाहा।

इस टोंक की भाव सहित वंदना करने से 32 करोड़ उपवास का फल होता है।

नेमिनाथ भगवान
गिरनार पर्वत

।। चौपाई ।।

नेमिनाथ भगवान हमारे,
गिरनारी से मोक्षपधारे।
श्री सम्मेद शिखर जी आऊँ,
करुँ वंदना अर्घ चढ़ाऊँ।।24।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्रादि शम्बु, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध आदि 72 करोड़ 700 मुनि गिरनार पर्वत से सिद्ध हुए तिनके चरण कमल में मन-वचन-काय से बारम्बार नमोऽस्तु-3
जलादि महार्घ निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्णभद्र कूट
पार्श्वनाथ भगवान

|| चौपाई ||

पारस प्रभु ने शिवपद पाया,
स्वर्णभद्र यह कूट कहाया।
श्री सम्मेद शिखर जी आऊँ,
करुँ वंदना अर्घ चढ़ाऊँ।।25।।

ऊँ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्रादि 82 करोड़ 84 लाख 45 हजार 742 मुनि इस स्वर्णभद्र कूट से सिद्ध हुए तिनके चरण कमल में मन-वचन-काय से बारम्बार नमोऽस्तु-3 जलादि महार्घ निर्वपामीति स्वाहा।

एक बार इस कूट को शुध्द भाव से ध्यान व दर्शन करने से पशु गति से छुटकारा हो जाता है और 16 करोड़ उपवास का फल एक बार भाव सहित वंदना करने से होता है।

श्री सम्मेद शिखर जी पूजा

सिद्ध क्षेत्र सम्मेद को, नमन अनंतों बार ।
सर्व सिद्ध पूजा रचूँ, सिद्ध भक्ति उर धार।।

ऊँ ह्रीं सर्व सिद्धेभ्यो नमः श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं,अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं, अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

सम्मेदाचल तीर्थ यह, सिद्धपुरी का द्वार।
प्रासुक जल पूजा रचूँ, सम्मेदाचल सार।।

ऊँ ह्रीं सर्व सिद्धेभ्यो नमः श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

परम पूज्य शुभ तीर्थ यह, अतिपावन आधार।
चंदन से पूजा रचूँ, सम्मेदाचल सार।।

ऊँ ह्रीं सर्व सिद्धेभ्यो नमः श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध अनंतों हो गये, होंगे सिद्ध अपार।
अक्षत से पूजा रचूँ, सम्मेदाचल सार।।

ऊँ ह्रीं सर्व सिद्धेभ्यो नमः श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों की वर्षा करे, सुरगण अपरम्पार।
पुष्पों से पूजा करुँ, सम्मेदाचल सार।।

ऊँ ह्रीं सर्व सिद्धेभ्यो नमः श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

आप शिखर जी से गये, लोक शिखर अविकार।
नैविद से पूजा रचूँ, सम्मेदाचल सार।।

ऊँ ह्रीं सर्व सिद्धेभ्यो नमः श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान दीप जलता रहे, होवे शुद्ध विचार।
दीपक से पूजा करुँ, सम्मेदाचल सार।।

ऊँ ह्रीं सर्व सिद्धेभ्यो नमः श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

संयम से सुरभित रहूँ, जैनागम अनुसार।
धूप खेय पूजा रचूँ, सम्मेदाचल सार।।

ऊँ ह्रीं सर्व सिद्धेभ्यो नमः श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

महा मोक्षफल चाहता, रत्नत्रय को धार।
श्री फल से पूजा रचूँ, सम्मेदाचल सार।।

ऊँ ह्रीं सर्व सिद्धेभ्यो नमः श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों द्रव्य सजाय कर,आठोंगुण चित् धार।
अर्घ समर्पण मैं करुँ , सम्मेदाचल सार।।

ऊँ ह्रीं सर्व सिद्धेभ्यो नमः श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला
त्रोटक छंद

जय पारस पारस गूँज रहीं, हर टोंक यहाँ पर पूज्य रहीं।
नरनाथ जजें, सुरनाथ जजें, मुनिनाथ भजें ऋषिनाथ भजें।।

हर टोंक कहे हर कूट कहे, अघ छूट रहे, अघ छूट रहे।
कबसे कितने मुनि मोक्षगये, सब सिद्ध शिला पर जाय बसे।।

उनके तप के परमाणु यहाँ, व्रत के जप के परमाणु यहाँ।
निखरे बिखरे कण में कण में, अतएव यहाँ क्षण में क्षण में।।

उनकी महिमा, उनकी गरिमा, हम पूज रहे उनकी प्रतिमा।
जिनने-जिनने निज ध्यान किया, जिनने-जिनने शिव धाम लिया।।

बहुभक्ति बढ़ा हम पूजत हैं, जिनभक्ति रचा हम नाचत हैं।
जय सिद्धधरा अतिशुद्ध धरा, इसमें परिणाम विशुद्ध भरा।।

तप से नय से कुछ सिद्ध हुए,कुछ संयम जप से सिद्ध हुए।
व्रत चारित से कुछ सिद्ध हुए, श्रुत से धृति से कुछ सिद्ध हुए।।

कुछ ध्यान कला से सिद्ध हुए, कुछ ज्ञान कला से सिद्ध हुए।
जय हो,जय हो,जय हो, जय हो, सब सिद्धन की जय हो जय हो।।

यह पर्वत पावन-पावन है, बरसा जिन आगम सावन है।
बरसाय रहा हरषाय रहा, अपनी महिमा दरशाय रहा।।

कबसे इसकी महिमा कितनी, जिनदेव बता सकते जितनी।
हम तो केवल नत मस्तक हैं, पद वंदत हैं शुभ चिंतक हैं।।

ऊँ ह्रीं सर्व सिद्धेभ्यो नमः श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो
अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ निर्वपामीति स्वाहा।
पुष्पांजलिं क्षिपामि।

मुक्तागिरि जैन तीर्थ, मध्यप्रदेश

॥ सारस्वत श्रमण ॥

पूर्व नाम	पण्डित अशोक कुमार जी जैन शास्त्री
जन्मस्थान	किसनपुरा (सागर) म.प्र.
जन्मतिथि	कार्तिक कृष्ण अमावस्या 2033 तदनुकूल 23 अक्टूबर 1976
पिता	श्रावकरत्न श्री लखमीचन्द्र जैन
माता	श्राविकारत्न श्रीमती गुलाबबाई जैन
शिक्षा	संस्कृत शास्त्री प्रथम वर्ष (इण्टर)
धार्मिक शिक्षा	धर्मशास्त्री द्वितीय वर्ष
शिक्षण संस्थान	श्री गणेशवर्णी दिगम्बर जैन महाविद्यालय मोराजी सागर म.प्र.
वैराग्य	9 अक्टूबर 1994 को ब्र. व्रत लिया
क्षु. दीक्षा	28 जनवरी 1995 मंगलगिरि सागर म.प्र.
ऐलक दीक्षा	23 फरवरी 1998 देवेन्द्रनगर (पन्ना) म.प्र.
मुनि दीक्षा	14 दिसंबर 1998 अतिशय क्षेत्र बरासौ भिण्ड म.प्र.
दीक्षा गुरु	गणाचार्य 108 श्री विरागसागर जी महाराज
आचार्य पद	31 मार्च 2007 औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
विशेष	जैन आगम रुपी मानसरोवर के राजहंस की तरह झलक देने वाले प्रज्ञाश्रमण की प्रवचन शैली जन-जन द्वारा हृदयग्राह्य है।
कृतियाँ	अभी तक आचार्य श्री द्वारा 62 कृतियों की सृजना की गई है।
अलंकरण	'' सारस्वत-श्रमण '', '' सारस्वत-कवि '' एवं '' शास्त्र-कवि ''